

❀ श्री जानकीप्राणवल्लभाय नमः ❀

॥ आन्दोलरहस्यदीपका ॥



❀ राग मलार ❀

हिंडोलना आलि भूलत लाडिली
लाल ॥ हिंडोलसाल विचित्र कंचन कोट
जगमग जोत । ध्वज कलस विद्रुम कं-
गूरनि पर ललित उपमा होत ॥ जनु
अरुण महिधर सिखर बैठे निकर खग-
पति गोत । चहुँ फेर ललि द्रुमावली फल
पत्र कुसुम सजात १ ॥ बोलत बिहंग
अनेक मृदुरव कोक कोकी मोर । सारो
सुवा पिक चाक चातक ललित लाल
चकोर ॥ वेदी ललित द्रुम द्रुमनि प्रति

सम सतर सोभासाज । मूर्ति मनोहर
 ताख रचना साख शोभा आज २ । फूले
 कुसुम द्रुम विविधि रंग सुगन्ध के चह-
 चाव । गुंजत मधुप मधुमत्त नाना रंगरज
 अंग फाव ॥ सीरी सुगन्ध सुमन्द बात
 विनोद कन्द बहन्त । परसत अनंग उ-
 दोत हिय अभिलाष कामिनि कन्त ३ ॥
 तहँ भूमि कंचनमड मनोहर जटित नग
 पचरंग । बूटे विविधि बेली विचित्र सु-
 जाल जोति पतंग ॥ तामध्य सुभग त-
 डाग हाटक रचित घाट सुचार । सोपान
 सुन्दर प्रीतमा जनु रची निजकर मार ४
 कासार बिच यक बंगला मणि फटिक
 रचित विसाल । बूटे विविधि बिद्रुम स-
 चित रचि ललित कंचन जाल ॥ ऐना

अनूप सरूप युतकल कामकौतुक केलि ।
 शत अष्टद्वार विचित्र रचनाखचित
 खंभसुबेलि ५ ॥ तहँ विविधिवसन बितान
 भालर जरकसी नगदार । गजमुक्ति बि
 द्रुम फुन्द मरकत कलित कंचनतार ॥
 कहँ हरित हाटक चित्र छत्र बितान बि-
 नाहिं विशेष । कहँ अरुन मणिमय चित्र
 मरकत जाल कंचन रेख ६ ॥ सुखमा
 समाज अपार वरनत पार पावत कौन ।
 लखि शेष शारद शम्भु विधि कवि कैरहे
 यों मौन ॥ तहँ विछे बिस्तर पाटमय
 गिलमै गलीचा चारु । ढिग चित्र कंचन
 तारमनि मनुसजित सयनी मारु ७ ॥ तहँ
 मध्य खण्ड अनूप रचना बेदिका मनि
 चित्र । जग मग सुजोति विराज मानौ

उदय बहु शशि मित्र ॥ तापर विचित्र
 हिंडोलना सियलाल भूलैरंग । गावै अ-
 लीगन मधुर स्वर बाजै मृदंग उपंगट ॥
 युगखंभ पुष्ट सुउच्च कंचन सदन रचना
 सोह । नृत्यत कनक कल कामिनी जेहि
 निराखि रतिमन मोह ॥ मरुवा मयारी
 सिखर कलस कंगूर जाल अनूप । भौंरा
 सुभौंरी भंग कूत्रम बिहंग गण बहुरूप ९
 डांडी सुठार सुचारु चार विचित्र चित्रित
 जाल । भूमक भूलाभल जोति पुंज सु-
 मंजु मुक्तालाल ॥ चहुँ फेर नृत्तक मोर
 मुनिया फुन्द रचित मुकेश । कलसूत्र
 रचित बिहंग विहरत खचित अंग सु-
 देश १० ॥ लघु लघु ललित द्रुममनि
 रचित चहुँपास धरे विचित्र । फल पत्र

कुसुम समंग सोभित निरखि विधि हिय
 चित्र ॥ युगपांति कृत्रम ललित ललना
 करन कंचन दण्ड । युगपांति कृत्रम भद्र
 अनूप विभाल सुण्डा दण्ड ११ ॥ यहि
 भांति रचना अमित कौतुक रंग भूलन
 साल । तहँ अमित अलिगन संग आये
 जानकी रघुलाल । सखि प्रथम मंगल
 गानकरि धरि कुम्भ मंगलरूप । चौके
 सुगजमनि मय रचे धरि दीपमाल अ-
 नूप १२ ॥ मनिमय जवांकुर पात्र धरि
 रोषे सुकदली खंभ । दधि रोचना दुवांक
 कुम कुम जल जमाल सुअंभ ॥ तहँ प्र-
 थम गौरि गणेश पूजे पुनि अनंग पु-
 जाय । रसरीति अलि गावन लगीं बाजे
 सुनिविधि बजाय १३ ॥ तब विहाँसि अ-

लिआंदोलिका बोली ललित मृदुबैन ।
 अब भूलिये रसदम्पती इक संग रंजित
 मैन ॥ परिनेग हमरो दीजिये नृप नंदनी
 सुखदानि ल्यौनाम पियको नागरी
 सुनि लाड़िली सकुचानि १४ ॥ जिन
 लाज कीजै लाड़िली दीजे हमारो भाग
 पियभावते को नाम लीजै अचल भाग
 सोहाग ॥ ये विदित रितिया बेद जानो
 ले पिया को नाम । पुनि भूलिये पिय
 जीवनी जग रीति या अनुपाम १५ ॥ तब
 बिप्र रूप बनाइ आई सखी निपुण सु-
 चार । पिय प्यारि चढ्यो अंदोलनापढि
 सांत मंगलचार ॥ इकसंग बाजे बा-
 जने बहु मदन भेरी ढोल । स्वर मिलित
 भिलित विनोद चहुँदिशि गावती अलि

गोल १६ ॥ इत घुमड़ घन नभ उमड़ि
 छाये दामिनी दरसाय । बरसत भ्रमा
 भ्रम बुन्द बड़ि २ पवन त्यों सरसाय ॥
 तहँ कोकिला गावत नटत केकी मृदंग
 घनघोर । भींगुर मनो मंजीर रव चा-
 तक चुटुकि रसबोर १७ ॥ बाढ्यो अ-
 धिक रस भूलना सखि छकीं सब रस
 रूप । खसि बसन कंचुकि कसन छूटत
 टुटतहार अनूप ॥ सो मुक्तमणि विस्त-
 रनपर कोमल चरण चुभि जाय । भय
 मानि ले सब दासिका जल मांभि देत
 बहाय १८ ॥ भुकि भुलनि मे रसहुलनि
 में दरसै परसपर रंग । प्यारो हुलनि
 मिस भो परसपर सत नवेली अंग ॥ तब
 लाड़िली बस लाज पियको अरज करि

दृगमैन.। सो लखत नहि नागर नवल
 रससानि रसउरऐन १९॥ तहँ उभयसखि
 खट रवि उभय गुरु दामिनी घनमाहा
 उडगण सहित बिलसत परसपर छटा
 परसत ब्राह्म ॥ अलकै विधुरिराजतवद-
 न पर सोह श्रम जलविंदु । जनु प्रगट
 अमिलखि उरग अनि बहु घेरि लीनौ
 इंदु २०॥ पीतम प्रिया मुख श्रमसलिल
 कन पोछि हित सुखलेत । जनु नागराज
 सुइंदु अरचत सुधा साधन हेत ॥ जब
 लाडिली कटि लचकि मचकति भुकति
 पियकी बोर ॥ तब जात बलि २ लाडिलौ
 गति होत चंद चकोर २१॥ जब परसि
 बात उरोज अंचल उड़त सिय सकुचा
 य । पुनि हेरि पिय तन नमित चखरहि

रसन दसन दवाय । लखि हाव पियउर
 भाव सरसत चाव चित उमगात ॥ सो
 निरखि दंपति मुख सरस अलि मुदित
 उमगी गात २२ ॥ इक नई रीति निहा
 रि बाढ्यौ अलिन उर आनंद । दूगकंज
 प्रफुलित लालके निरखत सियामुख
 बंद ॥ प्यारी बदन जल जात छवि
 मकरंद अलि पिय नैन । रसपान करत
 न टरत छिन छाये छके दिन रैन २३ ॥
 हिय हार उरभे दुहनके त्यों अली भो-
 टा देत । सुरभे न भोकनि भपटि लप
 टी नवल पिय रसलेत ॥ लखि श्रमित
 सम भूलनि पिया प्यारी लई भरिअंक
 । ले गोद पिय भूलन लगे लखि छके
 बदन मयंक २४ ॥ सनमुख सरस भू

लन लगे अलि भ्रमकि भोटादेत ।
 प्पारी डरपि पिय कण्ठ लिपटी अलीसो
 रसलेत ॥ इक अली युगपट ग्रन्थि दे
 सिर मोर मोरि धराइ ॥ तब व्याह गा-
 वन लगी ललना मोद हिय सरसाइ ॥
 २५ ॥ आंदोल केलि निकुंज यहिविधि
 भूलि सिय रघुलाल । पुनि चित्र वन
 मन मुदित गवने रूपनिधि सुखजाल ॥
 कोटिन अलीगन संग शोभित रूप गुन
 की मूरि । जिनको निरखि रति रमा ला-
 जत अपर उपमा कूरि २६ ॥ नूपुर ठ-
 मुकि किकिणि रमकि भूषण भ्रमक धनि
 छाइ । रही सुरंग मचाइ मुनिमन जोभ
 कीनो जाइ ॥ वादित्र धुनि बहु गान
 धुनि रहि सहि अहोस्वर पूरि । सिंगार

रस उमङ्ग्यो अधिक लखि पिया मनचक
 चूरि २७ ॥ जब मध्य बन पहुँचे सिया
 पिय उमडि घन भरिलाइ । चमकन
 लगी चपला चहुँदिशि मोर सोर सुनाइ
 ॥ भीजे अलिन के चोल चूंदरि चुवन
 लागे रंग । भीने सुपट लागे लिपट द-
 रसाइ त्यों अलि अंग २८ ॥ लखिलाल
 तन उर लाज छाई पिया त्यों रसछाई ।
 करि गान अति रसतान भरि २ अलिन
 मन उरभाइ ॥ मृगी ज्यों सब ठगी ना-
 गरि रहि विरह तन धेरि । मिलन चा-
 हति लाल अंक निसंक हारी हेरि २९ ॥
 छाई निशासी छाह घनकी निवड़ बन
 की ओट । कैसे मिलै सियलाल अलि
 सब गसी चिन्ता कोट ॥ द्रुम द्रुमनि प्रति

ढूढ़त फिरै मन हरे मूरति श्याम । टेरे
 परसपर मिलै जब कोउ बिरह बेधीबाम
 ३० ॥ परि प्रीति लखि सबको मिलेभइ
 नवल पुरन काम । कहती चतुर चूड़ा-
 मनी तुमरामहौ सुखधाम ॥ इक कल्प
 तरु तर सिया पीतम नहिं सर्खा कोउ
 अंक । घन गरज डरपत लाड़िली पिय
 गोइ उर धन रंक ३१ ॥ घन गये बर-
 सी सरस आली परसि प्यारी लाल ।
 तब चित्रवन नवकुंज पहुँचे साजि नव
 पटमाल ॥ तहँ अली करि आरति नि-
 छावरि भोग भरि मनिथार । अति प्रीति
 मधु भोजन कराये रचे नव सिंगार ३२
 पुनि लैगई आंदोल कच्छ सुस्वच्छ मनि
 बहुधाम । बहु रंग चित्र हिंडोलना भू-

एक झलक मनिदाम ॥ कल कलित व
 लित विहंग भौरा चलित कलबलडोरि
 । नव पुत्रिका कंचन मई गाँव नचे अंग
 मोरि ३३ । इकलक्ष दल मनि कंजमंजुल
 प्रति दलन अन्दोल । सब सखिन युत
 झुलन लगे सियलाल मनरसलोल ॥
 तवमदन भेरि मृदंग बाजे इत सघनघन
 धार । चमकै चमाचम चंचला चक्र मोर
 मोरी सोर ३४ ॥ नाचै अलौगन तान मान
 मृदंग पद करताल । समधुनी सुनिमूनि
 ध्यान विसरै अति मगन मनलाल ॥
 यहि भांति झुले कला कोटिन रूप प्रि-
 याकी जान । सिंगार सैल उदार शोभा
 चले जानकि जान ३५ ॥ जहँ भगत
 झरना तरल वरना शृंग शोभा धाम ।

आकर अमित मनि रंगबहु बिहरत अ-
 मित मृगदाम ॥ कोउ श्याम अंग कोउ
 रवेत अंग कोउ कनक वरण विशेष ।
 कोउ चित्र चारु विचित्र मरकत रचित
 कंचन रेख ३६ ॥ तहँ मोर बोलत अत
 न खोलत मरुत डोलतरंग । पहुँचे तहां
 रसरंग भीजे लाल सिय अलि संग ।
 सिंगार अलि कर आरती भोजन मधुर
 करवाइ । नव वसन भूषन सुचि सुमन्ध
 अनूप रूप अघाइ ३७ ॥ अधिभू ल-
 लित भूषित परम रमनीय द्रुमचहुँवोर ।
 तहँ विविधि रंग वितान भालर बड़ीपट
 पचमोर ॥ तहँ बेदिका बिद्रुम रचित म-
 रकत खचित गजकोर । कल सत्र चा-
 लित सुंद मंडित कनक सिखरी मोर ३८

(१५)

तापर सुमन अंदोल खचित अमोल
मनि बहु रंग । भूलै भुलावै परसपर
सिय लाल ललना संग ॥ बाढ्यो अ-
धिक रस छकी नबला प्रबल तहँ प्रति
ध्वान । मृग घेरि आये भुंढ भुंढनि च-
कित दीन्है कान ३९ ॥ इत देर जानी
अवध रानी मनहि चिंता मान । अव
धेशजू ढिग पठय नाजर साजि सैना
जान ॥ संग सखा लषन समेत गज च-
ढि चले सौज बनाइ । दल बीच राखि
सुजान लछनलाल पहुँचे जाइ १४० ॥
मरजी भँगाइ गये भीतर करिव जाइ
जुहार । इक अली करगहि लागि भु-
लावन को सुनै समचार ॥ रघुबीर नि-
कट बोलाइ वृभी कह्यौ मातु संदेस ।

फेरे लषन को दल रह्यो सब कह्यो मा
 तु संदेस ४१ ॥ पुनि मातु विविधि मि
 ठाइ मेवा मुगद बहु पकवान । सनि
 सुगंध अनेक विधि भारक पठायेजान ॥
 सो रजनि सैल विहार बीतीं भवन भोर
 प्रवेश । कियो सिय रघुनंद जननी दान
 दिय धन देश ४२ ॥ ललित लीला
 लाल सिय की त्रिगुन माया पार । पुरुष
 तहँ पहुँचै नहीं केवल अर्ली अधिकार ॥
 रसिक अलि जीवन यही ध्यावै रटैदिन
 रैन । बिनु जुगल रस लीला लखे छिन
 पल हिये किमि चैन ४३ ॥ इति श्री
 मद्राजराघव दास चरणानुजीवी श्री म
 ज्जनक राजकिशोरी सरन कृता आंदो
 ल रहस्यदीपिका समाप्तम् ॥ शुभम् ॥